बुधवार, 23 नवंबर 2016

लोकमत समाचार

आतंक फैलाने की मानसिकता

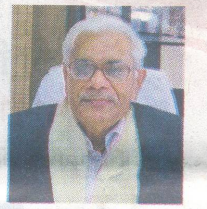

गिरीश्वर मिश्र
कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
misragirishwar@gmail.com

वैश्वीकरण का जमाना कुछ दिलासा देता दिखता है पर जिस मानवीय बोध और सार्वभौमिक दृष्टि की जरूरत आज है उसके लिए जगह कम है. आतंक मनुष्यता के विरुद्ध होता है. मनुष्यता का भविष्य इसी पर निर्भर करेगा कि हम किस तरह जुड़ने और जोड़ने की संभावनाओं को तलाश पाएंगे.

आज विश्व के अनेक देशों में आतंक की घटनाएं बड़े पैमाने पर दर्ज की जा रही हैं और उनकी संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है. इन घटनाओं की भाषा हिंसा की होती है और इनका प्रमुख उद्देश्य अधिकाधिक मात्रा में किसी देश की प्रचलित व्यवस्था में अस्थिरता लाना होता है. इस काम को अंजाम देने के लिए आज टेक्नोलॉजी के नए-नए आविष्कारों का प्रयोग किया जा रहा है जो अधिकाधिक मारक क्षमता से लैस होते जा रहे हैं. आकस्मिक रूप से उपस्थित होने वाली इन घटनाओं के कारण जनजीवन में व्यतिक्रम आता है. इस तरह की कार्रवाई का तात्कालिक उद्देश्य दहशत फैला कर दबाव बनाना होता है. विस्फोट, आकस्मिक हमला और जीवित बम आदि के द्वारा व्यापक तौर पर अफरा-तफरी मचाने की कोशिश की जाती है. इन सब में देश और समाज के धन-जन को ज्यादा से ज्यादा क्षति पहुंचाने की कोशिश रहती है. इन घटनाओं पर थोड़ा गौर करें तो यह बात साफ हो जाती है कि प्राय: ये प्रतिक्रियास्वरूप होती हैं और लक्षित समुदाय को भौतिक, सामाजिक और मानसिक घाव देती रहती हैं. आतंक आज कई-कई चेहरे और मुखौटे लेकर हमारे सामने आ रहा है. आतंकवादी अक्सर पहचान छिपाने के लिए अपना चेहरा और तरकीबें बदलते रहते हैं.

कहना न होगा कि आतंकवादी समूहों द्वारा अंजाम दी जाने वाली घटनाओं में निर्मम रूप से जीवन और पर्यावरण को व्यापक मात्रा में क्षति पहुंचती है. कभी-कभी तो यह क्षति अपूरणीय होती है. अफगानिस्तान में तालिबानी आतंकियों द्वारा बुद्ध की मूर्तियों को नष्ट करना इसी प्रकार का काम है. परंतु आज का एक कड़वा सच यह भी है कि आतंक अब राज्यसमर्थित कार्रवाई भी होती जा रही है. कुछ देशों की सरकारें योजनाबद्ध रूप से एक अस्त्र या चाल की भांति आतंकवादी गतिविधियों को प्रश्रय देती हैं और प्रयोग करती हैं. कई देशों द्वारा इसका उपयोग प्रतिद्वंद्वी देश से अपने लिए राजनैतिक बढ़त पाने और बनाए रखने के लिए भी किया जाता है. सामरिक व्यापार और बाजार भी आतंकवादी घटनाओं से जुड़ा होता है. आतंक के बीज अपने प्रतिरोध को दर्ज कराने की कोशिशों में आसानी से देखे और पहचाने जा सकते हैं. तीव्र प्रतिरोध की जरूरत से आश्वस्त होकर आतंकी संगठन अपने विरोधी को गंभीर संदेश देना चाहता है कि उनकी मांगें तत्काल समाधान चाहती हैं.

वैश्वीकरण का जमाना कुछ दिलासा देता दिखता है पर जिस मानवीय बोध और सार्वभौमिक दृष्टि की जरूरत आज है उसके लिए जगह कम है. आतंक मनुष्यता के विरुद्ध होता है. मनुष्यता का भविष्य इसी पर निर्भर करेगा कि हम किस तरह जुड़ने और जोड़ने की संभावनाओं को तलाश पाएंगे.